MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (Online)
International Peer Reviewed & Referred Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 01, Issue: 01, June 2023

मई दिवस का इतिहास व आज के युग मे मई दिवस का महत्व

कमल देव, पीएचडी शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, सप्त-सिंधु परिसर-I, केन्द्रीय विश्वविधालय, हिमाचल प्रदेश - 177101.

मई दिवस या मजदूर दिवस या अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस प्रतिवर्ष 1 मई को श्रमिक वर्ग द्वारा किए गए अमूल्य योगदान और महान कार्यों को पहचानने और उनकी सराहना करने के लिए मनाया जाता है। मई दिवस 19वीं शताब्दी के अंत में श्रमिकों के संघर्ष और उसके बाद के सशक्तिकरण का पर्याय है। इस दिन का उद्देश्य प्रतिवर्ष 1 मई को समाज के लिए और श्रमिकों के अमूल्य योगदान और बलिदान को पहचानने और उनकी सराहना करने के लिए मनाया जाता, इस दिन का उद्देश्य श्रमिक वर्ग और श्रमिक आंदोलन के प्रयासों और जीत को याद करना है। इस दिन अतीत को याद करने के अलावा, आज के श्रमिकों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के आवश्यक ज्ञान के साथ सशक्त बनाने का भी प्रयास किया जाता है।

इतिहास मे मजदूरों की काम करने की स्थिति बहुत गंभीर थी और असुरक्षित परिस्थितियों में भी काम करने का समय 10 से 16 घंटे प्रतिदिन थे। मई दिवस आठ घंटे के कार्य दिवस की आवश्यकता को बढ़ावा देने के लिए भी मनाया जाता है। दुनिया भर के कार्यस्थलों में सामाजिक न्याय और बुनियादी अधिकारों के विचारों को आकार देने वाले ऐतिहासिक संघर्षों और उसके बाद के लाभों को फिर से देखने के लिए यह दिन रखा गया है। इस दिन दुनिया भर में लोग श्रमिकों के अधिकारों के लिए विरोध प्रदर्शन और मार्च निकालकर उन्हें शोषण से बचाने और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मई दिवस के अनुसार किसी भी परिस्थिति में श्रमिकों से एक दिन में 8 घंटे से अधिक कार्य करने के लिए नहीं कहा जाना चाहिए। काम के घंटे बढ़ाए जा सकते हैं, लेकिन नियमित वेतन के अलावा अतिरिक्त पारिश्रमिक का भुगतान किया जाना चाहिए।

मई दिवस का इतिहास

मई दिवस या मजदूर दिवस की वास्तविक उत्पत्ति उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में औद्योगीकरण के समय और श्रमिकों की हड़ताल के दौरान हुए दुखद शिकागो के हेमार्केट नरसंहार में बताई गई है जहाँ कई लोगों ने अपनी जान गंवाई थी। 1860 के दशक के दौरान कार्यस्थल पर श्रमिकों की मृत्यु, चोटें, और अन्य भयानक स्थितियां बहुत आम थीं। इस समय, समाजवाद कामकाजी लोगों के लिए एक नया और आकर्षक विचार था, जो सभी वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण पर मजदूर वर्ग के नियंत्रण की विचारधारा के प्रति आकर्षित था। श्रमिकों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा था कि पूंजीवाद ने लाभ के लिए केवल उनके मालिकों, व्यापारिक श्रमिकों के जीवन को लाभ पहुंचाया। कार्यस्थल पर हर साल हजारों पुरुष, महिलाएं और बच्चे अनावश्यक रूप से मर रहे थे, कुछ

MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (Online)
International Peer Reviewed & Referred Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 01, Issue: 01, June 2023

उद्योगों में यह स्थिति कम थी लेकिन गरीबी से बाहर निकलने से उनकी मौत होती जा रही थी, जिसका समाजवाद एक और विकल्प पेश हुआ।

1860 के दशक की शुरुआत में कामकाजी लोगों ने वेतन में कटौती के बिना कार्य-दिवस को छोटा करने के लिए आंदोलन किया, लेकिन 1880 के दशक के अंत तक ऐसा नहीं हुआ। संगठित श्रमिक 8 घंटे के कार्य दिवस की घोषणा करवाने के लिए पर्याप्त ताकत हासिल करने में सक्षम थे लेकिन यह उद्घोषणा नियोक्ताओं की सहमति के बिना थी, फिर भी कई श्रमिक वर्ग द्वारा इसकी मांग की गई। कई कामकाजी उद्योगों में कामकाजी वर्ग के लोगों (पुरुषों, महिलाओं और बच्चों) की बढ़ती मौत के कारण उन्हें उद्योगों में अपने काम के घंटे कम करके काम करने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए आवाज उठानी पड़ी। अंतनत 1 मई 1884 में शिकागो में, श्रमिकों और समाजवादियों द्वारा किए गए कई प्रयासों के बाद, अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर (American Federation of Labour) ने श्रमिकों के लिए आठ घंटे का कानूनी कार्य समय घोषित किया और आठ घंटे का आंदोलन, जिसने श्रम के लिए आठ घंटे, मनोरंजन के लिए आठ घंटे और आराम के लिए आठ घंटे के कार्यक्रम को बढ़ावा दिया। मजदूर दिवस की शुरुआत के पीछे मुख्य कारण है, जैसे 1 मई, 1886 को, संयुक्त राज्य अमेरिका में हजारों व्यवसायों से लाखों श्रमिकों ने 1 मई को अपनी नौकरी छोड़ दी और काम के समय को आठ घंटे प्रति दिन करने के लिए हजारों व लाखों मजदूर सयुक्त राज्य अमेरिका की सड़कों पर उतरे और अधिक से अधिक श्रमिकों ने अपनी नौकरी छोड़ना जारी रखा और आंदोलन को शांतिपूर्ण ढंग से जारी रखा, दो दिन बाद, 3 मई 1886 किसी कारण से कुछ आंदोलनकारियों और पुलिस के बीच हिंसा भड़क उठी, और इस दिन (3 मई 1986) को एक पुलिस दल ने 16 घंटे के कार्य दिवस के बजाय 8 घंटे के कार्य दिवस की मांग कर रहे हड़ताली श्रमिकों में से कुछ को गोली मार दी जिससे उनकी मौत हो गई। अतः 4 मई 1886 को पुलिस की क्रूरता का विरोध करने के लिए श्रमिक नेताओं ने अगले दिन एक जन सभा बुलाई। उस सभा को शिकागो के मेयर कार्टर हैरिसन ने शांतिपूर्ण घोषित किया, जिन्होंने एक पर्यवेक्षक के रूप में भाग लिया। हैरिसन और अधिकांश प्रदर्शनकारियों के चले जाने के बाद पुलिस की एक टुकड़ी पहुंची और भीड़ को तितर-बितर करने की मांग की। उस समय एक ऐसे व्यक्ति द्वारा बम फेंका गया जिसकी पहचान कभी भी सकारात्मक रूप से नहीं हुई, और पुलिस ने बेतरतीब गोलियों से जवाब दिया। जिससे कई मजदूर मारे गए व कई घायल हुए, हालांकि मारे गए या घायल हुए नागरिकों की सटीक संख्या कभी निर्धारित नहीं की गई। इसमें आठ अराजकतावादी / क्रांतिकारी को गिरफ्तार किया गया और उन्हें हत्या का दोषी ठहराया गया, पूरी दुनिया ने देखा कि इन आठ आयोजकों को उनके कार्यों के लिए नहीं, जिनमें वे सभी निर्दोष थे, बल्कि उनकी राजनीतिक और सामाजिक मान्यताओं के लिए दोषी ठहराया गया था। इसे हेमार्केट नरसंहार के रूप में जाना जाता है, जिसे हेमार्केट दंगा या हेमार्केट अफेयर भी कहा जाता है। इस प्रकार 4 मई 1886 को शिकागो में पुलिस और श्रमिक प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसक टकराव, श्रमिकों के अधिकारों के लिए

MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (Online)
International Peer Reviewed & Referred Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 01, Issue: 01, June 2023

अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष का प्रतीक बन गया। अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस को कई अमेरिकी अभी भी मई दिवस को कम्युनिस्ट देशों द्वारा आनंदित छुट्टी के रूप में देखते हैं परंतु यह सिर्फ एक "कम्युनिस्ट" छुट्टी नहीं है।

1889 में शिकागो में हेमार्केट दंगा (1886) की स्मृति में समाजवादी समूहों और ट्रेड यूनियनों (Trade Unions) के एक अंतरराष्ट्रीय संघ ने 1 मई को श्रमिकों के समर्थन में एक दिन के रूप में नामित किया। 14 जुलाई 1889 को यूरोप में सोशलिस्ट पार्टियों की पहली अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा घोषित किए जाने के बाद मई दिवस पहली बार 1 मई 1890 को अंतर्राष्ट्रीय एकता और एकजुटता का दिन "मजदूर दिवस" मनाया गया। हालाँकि, भारत में पहली बार मई दिवस भारत में 1 मई 1923 को तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में मनाया गया था। 1 मई 1923 को लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान की शुरुआत के बाद लोगों ने इस दिन को मनाना शुरू किया, तब से मई दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस दिन को विभिन्न भारतीय राज्यों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है।

भारत में पहला मई दिवस समारोह 1 मई, 1923 को हिंदुस्तान की लेबर किसान पार्टी द्वारा मद्रास (अब चेन्नई) में आयोजित किया गया था। यह वह समय भी था जब भारत में पहली बार लाल झंडे का इस्तेमाल किया गया था। यह दिन कम्युनिस्ट और समाजवादी राजनीतिक दलों के लिए श्रमिक आंदोलनों से जुड़ा हुआ है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि 1 मई को 'महाराष्ट्र दिवस' और 'गुजरात दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है, जब 1960 में दो पश्चिमी राज्यों ने पूर्ववर्ती बंबई के बाद राज्य का दर्जा प्राप्त किया था। राज्य को भाषाई रेखाओं में विभाजित किया गया था।

मजदूर दिवस का महत्व

मजदूर दिवस एक महत्वपूर्ण अवसर है जो समाज में श्रमिकों के महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार करता है और मनाता है। यह दिन काम के मूल्य का सम्मान करता है तथा निष्पक्ष श्रम प्रथाओं और श्रमिकों के अधिकारों के महत्व को पहचानता है। इसकी उत्पत्ति काम करने की स्थिति में सुधार, बेहतर वेतन सुरक्षित करने और आवश्यक श्रमिक सुरक्षा स्थापित करने के प्रयासों से हुई है। इसके अलावा, मजदूर दिवस सामाजिक न्याय, समानता और आर्थिक निष्पक्षता के लिए चल रहे संघर्ष की याद दिलाता है। यह श्रमिकों को एकजुटता में एकजुट होने, की गई प्रगति के लिए आभार व्यक्त करने और आगे की आवश्यक प्रगति पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है। कुल मिलाकर, मजदूर दिवस श्रमिक आंदोलन की उपलब्धियों और सामाजिक और आर्थिक न्याय की खोज में सामूहिक कार्रवाई की ताकत का प्रतीक है। आज के समय में विभिन्न उद्योगों और देशों में श्रमिकों के बीच सामाजिक असमानता अभी भी प्रचलित है। मई दिवस इन श्रमिकों को मजदूर संघों क माध्यम से अपने हक के लिए आवाज उठाने और नीति निर्माताओं और राजनेताओं को सामाजिक न्याय की दिशा में काम करने के लिए कहने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। यह हमारे समाज में श्रमिक वर्ग द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका की याद दिलाने के रूप में भी कार्य करता है।

MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH
(MUCOJOR)-2583-9829 (Online)
International Peer Reviewed & Referred Journal
ISSN: 2583-9829, Volume: 01, Issue: 01, June 2023

मई दिवस – एक वैश्विक दिवस

अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस कई देशों में एक सार्वजनिक अवकाश है, यह मूल रूप से दुनिया भर के श्रमिकों के लिए एक त्योहार है। मई दिवस स्वीडन, फ्रांस, पोलैंड, फिनलैंड, नॉर्वे, स्पेन, जर्मनी, इटली आदि सहित अधिकांश यूरोपीय देशों में एक देशव्यापी अवकाश है। पनामा, क्यूबा, मेक्सिको, गुयाना, पेरू, उरुग्वे, ब्राजील, अर्जेंटीना और चिली भी मनाते हैं। मई दिवस 1 मई को दुनिया भर के 80 से अधिक देशों में मनाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस की थीम

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन भी इस दिन कई तरह के आयोजन करता है। दुनिया भर में इस उत्सव ने ऐतिहासिक महत्व प्राप्त किया है और दुनिया भर के श्रमिक संघ इसे मनाते हैं। सरकार द्वारा लोगों को बेहतर तरीके से प्राप्त किए जाने वाले उनके अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कई थीम प्रदान की गई हैं और वे इस प्रकार हैं, जैसे 2022 के अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस की थीम "बाल श्रम को समाप्त करने के लिए सार्वभौमिक सामाजिक संरक्षण" थी।

- "मानवता का उत्थान करने वाले सभी श्रम की गरिमा और महत्व है और श्रमसाध्य उत्कृष्टता के साथ किया जाना चाहिए"

  -डॉ मार्टिन लूथर किंग जूनियर

- "श्रम की गरिमा इस बात पर निर्भर नहीं करती है कि आप क्या करते हैं, बल्कि आप इसे कैसे करते हैं।"

  -एडविन ऑसगूड

- "बिना श्रम के कोई भी मानव कृति नहीं बनाई गई है।"

  -आंद्रे गिडे

- "श्रम दिवस हमारे देश की ताकत, समृद्धि और कल्याण के लिए श्रमिकों के योगदान को पहचानने का समय है।"

  -टॉम पेरेज़

References:

- Trachtenberg, A., & Weinstone, W. (1947). *The History of May Day* (No. 14). International Publishers.
- Hall, S., Williams, R., & Thompson, E. (1967). New left: May Day Manifesto.
- Williams, R. (2018). *May Day Manifesto 1968*. Verso Books.

Certificate No.:010106202305

MULTIDISCIPLINARY COSMOPOLITAN JOURNAL OF RESEARCH (MUCOJOR)-2583-9829 (ON-LINE)

International Peer Reviewed and Refereed Journal

Certification of Publication

The Board of Multidisciplinary Cosmopolitan Journal of Research (MUCOJOR) is hereby awarding this certificate to

कमल देव

In recognition of the publication of the paper entitled

मई दिवस का इतिहास व आज के युग मे मई दिवस का महत्व

Published in Volume 01, Issue 01, June 2023.

EDITOR IN CHIEF